4:11-16

सुसमाचार प्रचारक की जिम्मेदारियां

समय-समय पर, हम में से जो लोग प्रचार करते हैं, चाहे युवा हों या फिर बूढ़े, यह स्मरण दिलाया जाता है कि आखिर सुसमाचार प्रचारक क्या है। हमारे समय और ऊर्जा में कई प्रकार की मांग की जाती है जिससे हम अपने ध्यान से आसानी से भटक सकते हैं।

जब मैंने विद्यालय में "प्रचारक, उनके जीवन और कार्य" पर कक्षा लिया तो शिक्षकों ने 4:11-16 पर विशेष रुचि दिखाई। चार्ल्स आर. एर्डमैन ने लिखा, "युवा प्रचारक के लिए बुद्धिमान परामर्श के इन छः आयतों से और अधिक भारी कोई दूसरी आयत नहीं हो सकता है।"[1]

सुसमाचार प्रचारकों के लिए पौलुस का निर्देश आदेशात्मक क्रिया रूप में है। ये निर्देश सुझाव नहीं थे; वे तीमुथियुस को आज्ञा थीः

". . . आज्ञा कर, और सिखाता रह" (4:11)।
"कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए[2]; पर . . . आदर्श बन जा" (4:12)।
". . . लौलीन रह" (4:13)।
". . . निश्चिन्त न रह" (4:14)।
". . . अपना ध्यान लगाए रह . . ." (4:15)।
"इन बातों पर स्थिर रह . . ." (4:16)।

धर्मशास्त्र की आज्ञा कोई विकल्प नहीं है। यदि किसी को परमेश्वर द्वारा स्वीकृत सुसमाचार प्रचारक होना है तो ये आवश्यक हैं।

यह अनुच्छेद प्रचारकों के लिए है लेकिन कलीसिया के दूसरे सदस्यों के लिए भी यह उतना ही लाभप्रद है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इनमें से अधिकांश आयतें मसीहियों पर लागू होता है। इसके साथ ही, सब लोगों को स्पष्ट रूप से यह जानना होगा कि परमेश्वर ने (धर्मशास्त्र के द्वारा) एक सुसमाचारक को कैसे होना है और क्या करना है, के लिए नियुक्त किया है।

"परमेश्वर के वचन के साथ बना रह" (4:11)

[11]इन बातों की आज्ञा कर, और सिखाता रह।

आयत 11. पौलुस ने कहा, **इन बातों की आज्ञा कर, और सिखाता रह।**[3] "आज्ञा कर" (παραγγέλλω, *पारांगेल्लो)* एक बड़ा ही मजबूत शब्द है जिसका अर्थ "आज्ञा देना, आदेश करना" है।[4] अधिकांश अनुवादों में "आज्ञा कर" अनुवाद किया गया है (देखें KJV; NKJV; ASV; NIV)। इस शब्द का संज्ञा रूप (παραγγελία, *पारांगेलिया)* 1:18 में पाया जाता है, यह सेना में, "वरिष्ठ अधिकारी से प्राप्त आज्ञा और उसे दूसरों को पहुँचाना" है।[5] *पारांगेल्लो* यह दर्शाता है कि तीमुथियुस को अधिकार के साथ बोलना था। एक प्रचारक के पास केवल वचन का ही अधिकार है, लेकिन वह अधिकार बड़ा ही महत्वपूर्ण है।

इस व्याख्या के साथ ही हम अब "इन बातों" पर आते हैं। यह यूनानी शब्द ταῦτα *(टाओटा)* का अनुवाद है, जो इस पत्री में आठ बार प्रयोग किया गया है (3:14; 4:6, 11, 15; 5:7, 21; 6:2, 11)।[6] संदर्भ के आधार पर, ये शब्द या तो विशेष रूप से पौलुस ने जो अभी लिखा है या फिर सामान्य रूप से जो उसने इस पत्री में लिखा है, की ओर संकेत करता है। तीमुथियुस को अपने शब्द या विचार प्रचार करने के लिए नियुक्त नहीं किया गया था। बल्कि, पौलुस को प्रभु की ओर से जो प्रेरणादायक संदेश प्राप्त हुआ था उसे ही उसको आगे प्रचार करना था (2 तीमुथियुस 2:2)। अर्थात्, उसको *परमेश्वर के वचन* की आज्ञा और शिक्षा देना था। तीमुथियुस के नाम पौलुस की दूसरी पत्री में, उसने कहा, "कि तू *वचन का प्रचार* कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डाँट और समझा" (2 तीमुथियुस 4:2; बल दिया गया है)।

4:11-5:2 की आज्ञा सूचक वर्तमान काल में है, जो लगातार होने वाले कार्य की ओर संकेत करता है। तीमुथियुस को पौलुस द्वारा प्रकट किए गए प्रेरणित सच्चाई की आज्ञा और शिक्षा *देते रहना* था। किसी भी सुसमाचार प्रचारक की प्रथम जिम्मेदारी उसे थामे रहना था, पकड़े रहना था और परमेश्वर के वचन के बाहर कभी भी नहीं जाना था!

"एक अच्छा आदर्श बनना" (4:12)

[12]कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल-चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।

आयत 12. पौलुस ने तीमुथियुस को कहा कि उसे एक अच्छा आदर्श बनना है: **कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल-चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिये आदर्श बन जा।** स्पष्ट है

कि युवावस्था होने के कारण तीमुथियुस का कुछ लोग सम्मान नहीं करते होंगे।[7] "तुच्छ जानना" एक मजबूत यूनानी शब्द καταφρονέω *(काटाफ्रोनेओ)* का अनुवाद है। इसका यथा अनुवाद "नीचा दिखाना"[8] है; जो दो शब्दों κατά (*काटा,* "नीचे") और φρονέω (*फ्रोनेओ,* "सोचना") के संयोजन से बना है। इसका यह अर्थ है कि "किसी को या किसी वस्तु को घृणा या द्वेष की भावना से इस आशय के साथ कि उस वस्तु का मूल्य थोड़ा है, तुच्छ जानना है।"[9]

तीमुथियुस के "युवावस्था" (νεότης, *नियोटेस)* के संदर्भ में कुछ टिप्पणियां करना आवश्यक है।[10] जब तीमुथियुस दूसरे मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस से मिला (49 ई.), तो उस समय उसकी आयु अट्ठारह-उन्नीस वर्ष की रही होगी और तब तक उसकी ख्याति अति फैल गई होगी (प्रेरितों. 16:1-3)। जब 1 तीमुथियुस की पत्री लिखी गई होगी (64/65 ई.), तब तक यह युवा व्यक्ति पौलुस के साथ लगभग पंद्रह वर्षों से कार्य कर रहा होगा, जो इस समय उसकी आयु तीस से पैंतीस वर्ष हो गई होगी। पाश्चात्य समाज में, इस आयु के व्यक्ति को "युवा" नहीं कहा जाएगा;[11] लेकिन उस समय के अनुसार वह युवा था। द्वितीय सदी के एक मसीही लेखक, आइरेनियस ने कहा कि एक पुरुष की प्रथम अवस्था तीस वर्ष से प्रारंभ होकर चालीस वर्ष तक होता है।[12]

इफिसुस की कलीसिया पौलुस की सेवकाई, जब वह तीमुथियुस के आयु के लगभग दुगुने अवस्था के निकट थे, से परिचित थी। हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि कोई यह कहे, "तीमुथियुस एक अच्छा युवक है, लेकिन वह पौलुस नहीं है!" इससे बढ़कर, इफिसुस में तीमुथियुस को बूढ़े से संबंधित किया गया है (5:1)। कुछ व्यवसायी रहे होंगे जो आज्ञा देने के अभ्यस्त रहे होंगे; अन्य धनवान रहे होंगे और उनके दास भी होंगे जिनको उनकी आज्ञा माननी होती थी (6:17-19)। इससे भी बढ़कर, तीमुथियुस को कलीसिया के प्राचीनों के साथ भी कार्य करना था (5:17-19); परिभाषानुसार "प्राचीन" "बूढ़े" लोग हैं। ये सब एक युवक को बड़ा ही भयभीत करने वाला हो सकता था।

τύπος *(टूपोस)* का अनुवाद "आदर्श" किया गया है जिससे हमें अंग्रेजी शब्द "type" मिलता है। *टूपोस* "झटका या दबाव के कारण बने चिह्न" का द्योतक है।[13] इस सिद्धांत का विश्लेषण किसी पुराने टंकण यंत्र के माध्यम से किया जा सकता है: जब टंकण करने वाला बटन दबाता है, तो टंकण डंडे फीते और कागज पर जोर से मारता है, जिसके परिणामस्वरूप स्याही और छापे दोनों कागज पर छप जाता है। नैतिक क्षेत्र में, *टूपोस,* "उदाहरण" या "नमूने" का द्योतक है।[14] तीमुथियुस को अपने जीने के माध्यम से भाइयों पर एक आदर्श छोड़ना था।

पौलुस ने जीवन के पाँच प्राथमिक क्षेत्र को स्पर्श किया है: "बोली, व्यवहार, प्रेम, विश्वास और शुद्धता।"[15] "वचन" (λόγος, *लोगोस)* यीशु के कहे गए वचन से संबंधित है। यीशु ने कहा कि "जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है" (मत्ती 12:34)। "चाल चलन" (ἀναστροφή, *अनास्ट्रोफे)* "जीने का तरीका" है कि कोई किस प्रकार जीवन बिताता है।[16] हमें ऐसे जीना है कि जो हमारे इर्द-गिर्द रहते हैं वे "परमेश्वर की महिमा करें" (1 पतरस 2:12)। "प्रेम" (ἀγάπη, *अगापे)*

सबके प्रति वास्तविक चिंता की भावना है, जो सदैव दूसरे की भलाई को सर्वोपरि रखे।[17] हमें अपने पड़ोसी एवं यहाँ तक कि अपने शत्रुओं को भी प्रेम करना है (मत्ती 22:39; 5:44)। "विश्वास" (πίστις, *पिसटिस)* मुख्यतः प्रभु में "भरोसा" और "आत्मविश्वास" है।[18] जब संकट हमारे जीवन में आती है तो दूसरों को यह देखना है कि ऐसे समय हम प्रभु पर भरोसा करते हैं। *पिसटिस* "विश्वासयोग्ता" और "कर्तव्यपरायणता" को संबोधित करता है।[19] हम व्यक्तिगत् रूप से ऐसे विश्वासयोग्य व्यक्ति बनें जो अपने वचन पर बना रहता है।

इस सूची का पाँचवां शब्द "पवित्रता" (ἁγνεία, *हागनैया)* है, जिसका अभ्युदय भी "पवित्र" (ἅγιος, *हागिओस)* से है। यह शब्द मन और हृदय की पवित्रता को बांधता है जिसका परिणाम जीवन की पवित्रता है। पौलुस के दिनों में इस शब्द का प्रयोग "सती [विशुद्ध],"[20] यौन संबंध में शुद्धता या पवित्र, होने के लिए प्रयोग किया जाता था। अगले अध्याय में, पौलुस ने तीमुथियुस को जवान स्त्रियों के साथ "पूरी पवित्रता" से व्यवहार करने को कहा (5:2)।[21] तीमुथियुस के समान एकल युवक इस प्रकार की परीक्षा में गिर सकते हैं। परीक्षा भरपूरी से चारों ओर व्याप्त है। तीमुथियुस के दिनों में इफिसुस जैसे नगर यौन अनैतिकता के केंद्र थे। आज, अश्लीलता कम्प्यूटर में एक ही क्लिक की दूरी पर है। इससे बढ़कर, एक प्रचारक की सहायता पहुँचाने की भावना और दयालु स्वभाव की प्रवृति को जवान स्त्रियां और लड़कियां गलत समझ सकतीं हैं। आलिंगन, पीठ थपथपाना, या सहानुभूति के शब्दों को प्रेमी प्रस्ताव के रूप में गलत समझा जा सकता है।

पौलुस को तीमुथियुस को कहे गए शब्द हर एक मसीही पर लागू होता है। हम सबको हमारे बोली, व्यवहार, प्रेम, विश्वास, और पवित्रता में एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना है - विश्वासियों एवं अविश्वासियों दोनों के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना है। ऐसा करने से, हम "पृथ्वी के नमक" और "जगत की ज्योति" ठहरेंगे (मत्ती 5:13, 14)।

"प्रचार करने में लौलीन रह" (4:13)

[13]जब तक मैं न आऊं, तब तक पढ़ने और उपदेश और सिखाने में लौलीन रह।

आयत 13. अगला वाक्य **जब तक मैं आऊं** शब्दों के साथ प्रारंभ होता है। पौलुस, तीमुथियुस और इफिसुस की कलीसिया को शीघ्र मिलने की आशा जता रहा था।[22] उसी समय, प्रेरित ने तीमुथियुस को **पढ़ने और उपदेश और सिखाने में लौलीन रहने** का निर्देश दिया। "लौलीन रहना" προσέχω *(प्रोसेखो)* का अनुवाद है; यह "कोई अपने आपको व्यस्त रखे, समर्पित होना या किसी कार्य में सम्पूर्ण से रूप से व्यस्त रखना" है।[23] तीसरे अध्याय के आठवें आयत में इस शब्द का एक रूप "गम्भीर होना" भी है। तीमुथियुस को पौलुस द्वारा सूचीबद्ध तीन

गतिविधियों में अपने आपको लौलीन रखना था।[24] ये किसी भी प्रचारक के सेवा की जिम्मेदारी का केंद्र बिन्दु है।

इस सूची में सर्वप्रथम "सार्वजनिक रूप से परमेश्वर के वचन पढ़ना" सूचीबद्ध है। यूनानी पाठ में केवल "पढ़ना" शब्द आया है (देखें KJV); लेकिन नये नियम में "पढ़ने" (ἀνάγνωσις, *अनाग्नोसिस*[25]) को कलीसिया में "परमेश्वर के वचन पढ़ने" से संबंधित किया गया है।[26] यहूदी आराधनालय की आराधना में "परमेश्वर के वचन का सार्वजनिक पाठ" एक महत्वपूर्ण भाग था (देखें लूका 4:16-20; प्रेरितों. 13:14, 15); यह मसीही आराधना का भी अनिवार्य भाग था। जब पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की पत्री लिखी, तो उसने उन्हें बताया कि "उसकी पत्री सब भाइयों को पढ़कर सुनाई जाए" (1 थिस्स. 5:27)। जब उनसे कुलुस्से की कलीसिया को पत्री लिखा तो उसने कहा, "जब यह पत्र तुम्हारे यहां पढ़ लिया जाए, तो ऐसा करना कि लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़ा जाए, और वह पत्र जो लौदीकिया से आए उसे तुम भी पढ़ना" (कुलु. 4:16)।[27]

इसके बाद, पौलुस तीमुथियुस को "उपदेश" पर ध्यान देने को कहता है। कुछ अनुवादों में "प्रचार" शब्द का इस्तेमाल किया है (देखें NIV), लेकिन यूनानी लेख में "प्रचार/घोषणा" (κηρύσσω, *केरुस्सो)*[28] करने का शब्द नहीं है। जिस शब्द का अनुवाद "उपदेश" हुआ है, वह παράκλησις *(पैराक्लीसिस)* है जिसमें सांत्वना और प्रोत्साहन के लिए किसी को अपने साथ कर लेना सम्मिलित होता है।[29] आराधनालय में, पवित्र-शास्त्र के पढ़े जाने के पश्चात, जो उपस्थित होते थे उन्हें "उपदेश के शब्द" दिए जाते थे (देखें प्रेरितों 13:15)।

तीमुथियुस को "शिक्षा" (διδασκαλία, *डाईडेसकलिया)* पर भी ध्यान देना था। इसका संबंध निर्देश देने से है। शिक्षा देना सदा ही अपरिहार्य रहा है। 1 और 2 तीमुथियुस और तीतुस के तेरह अध्यायों में "शिक्षा" या "सिद्धान्त" के बीस से भी अधिक उल्लेख हैं।

"अपने वरदानों को प्रयोग करो" (4:14)

[14]उस वरदान के प्रति जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।

आयत 14. पौलुस ने जिन दायित्वों की रूपरेखा उसे दी उनसे तीमुथियुस अच्छा अनुभव कर रहा होगा, इसलिए पौलुस ने उस युवा प्रचारक को आश्वस्त किया कि वह उन कार्यों के लिए उपयुक्त है। उसने उसे स्मरण करवाया कि परमेश्वर ने उसे चुना था, लैस किया था, और उसको नियुक्त किया था (अपने द्वारा स्थापित अगुवों के द्वारा)। यह सब और इससे भी अधिक अगले निर्देश: **उस वरदान के प्रति जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह** द्वारा सुझाया जाता है।

यूनानी लेख में "भविष्यवाणी में होकर" का शब्दार्थ है "भविष्यवाणी के

द्वारा।" "भविष्यवाणी" (προφητεία, *प्रोफेटिया)* का अर्थ प्रभु से प्रेरणा प्राप्त करके बोलना था।[30] यह शब्द πρό (*प्रो*, "आगे") और φημί (*फेमी*, "बोलना") की संधि से बना है जिससे आगे का बोलना का अर्थ निकलता है। पौलुस ने तीमुथियुस से संबंधित भविष्यवाणियों का पहले ही उल्लेख कर दिया था। उसने 1:18 में लिखा, "हे पुत्र तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहिले तेरे विषय में की गई थीं, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं, कि तू उन के अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ते रह।" इससे पीछे किसी ने (हो सकता है पौलुस ने), तीमुथियुस के विषय भविष्यवाणी की थी। इस भविष्यवाणी का संबंध संभवतः तीमुथियुस के चुने जाने और पौलुस की यात्रा में उसका सहयोगी होने से था।

यहाँ प्रेरितों 13 के साथ समानान्तर बनाया जा सकता है, जहाँ पवित्र आत्मा ने कहा (संभवतः किसी भविष्यद्वक्ता के द्वारा), "मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिस के लिए मैं ने उन्हें बुलाया है" (प्रेरितों 13:2)। प्रभु ने पौलुस को व्यक्तिगत रीति से मिशनरी होने के लिए चुना था, और उसने तीमुथियुस को भी स्मरण करवाया कि उसके साथ भी यही बात थी।

न केवल तीमुथियुस का चुनाव ईश्वरीय था, वरन उसे इस कार्य के लिए ईश्वर की ओर से लैस भी किया गया था - जैसा कि उसे मिले "आत्मिक वरदान" से पता चलता है। आत्मिक वरदान χάρισμα *(कैरिस्मा)* से थे, जो कि "अनुग्रह" के लिए यूनानी शब्द (χάρις, *कैरिस)* से संबंधित है। *कैरिस्मा* वरदान के लिए है,[31] ऐसी वस्तु जिसे कमाया नहीं जाता है। नए नियम में इसका विशुद्ध प्रयोग उन वरदानों के लिए हुआ है जो अंततः परमेश्वर से आते हैं।

बहुतेरे यह मानते हैं कि 4:14 का वरदान कोई आश्चर्यकर्म का वरदान था। हो सकता है कि ऐसा हो, परन्तु संदर्भ में ऐसा कुछ नहीं है जो हमें इस निष्कर्ष के लिए बाध्य करता है। नए नियम में *कैरिस्मा* विभिन्न प्रकार से प्रयोग हुआ है। रोमियों 6:23 में यह उद्धार के वरदान के लिए है। रोमियों 12:6-8 और 1 पतरस 4:10, 11 में इसमें आश्चर्यकर्म और बिना आश्चर्यकर्म के वरदान (योग्यताएं) सम्मिलित हैं।[32]

संभवतः 4:14 का वरदान उन चुनौतियों से संबंधित था जिनका सुसमाचार प्रचारक होने के कारण तीमुथियुस को सामना करना पड़ता था। ऐसे दो दायित्व जिनका 4:13 में उल्लेख है, वे वरदानों की रोमियों 12:6-8 की सूची में भी पाए जाते हैं: शिक्षा और उपदेश। संभवतः 4:14 का वरदान तीमुथियुस को प्रभावी रूप से बोलने का परमेश्वर से मिला वरदान था, या यह कि वह पौलुस के साथ कार्य कर सके - या इन दोनों का सम्मिलित रूप। एक भावानुवाद में आया है "सेवकाई का वह विशेष वरदान" (MSG)। वह वरदान चाहे जो भी हो, परमेश्वर ने तीमुथियुस को उन योग्यताओं और संसाधनों से लैस किया था जिनके द्वारा वह आगे आने वाले चुनौतियों का सामना कर सके।

वरदान तीमुथियुस को "भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय" दिया जा चुका था। "प्राचीनों" (πρεσβυτέριον, *प्रैस्ब्युटेरियों)* संबंधित है

πρεσβύτερος *(प्रैस्ब्युटेरोस)* के साथ जो कि "प्राचीन" के लिए यूनानी पारिभाषिक शब्द है।[33] "प्राचीनों" का अर्थ है प्रेस्बिटर्स/प्राचीनों की "एक सभा," "प्राचीनों की समिति।"[34] इग्नेशियस[35] ने इस शब्द का उपयोग "स्थानीय कलीसिया में प्रेस्बिटर्स [प्राचीनों] के समुदाय" के लिए किया।[36] NEB में "प्राचीन समुदाय के रूप में" आया है। आज हम स्थानीय मण्डली के प्राचीनों के लिए कभी-कभी "प्राचीनों" कहते हैं।

कुछ प्रश्न शेष हैं कि कौन से "प्रेस्बिटरी" (प्राचीनों) से अभिप्राय है। एक विचार है कि पौलुस इफिसुस के प्राचीनों के विषय बात कर रहा था। इसलिए, "प्राचीनों के हाथ रखते समय" उस सार्वजनिक संस्कार का संकेत करता है जो पौलुस के उस शहर में तीमुथियुस को छोड़ने से कुछ पहले हुआ (1:3)।[37] यदि ऐसा है तो, यह असंगत है कि तीमुथियुस को उस शहर में रहने के लिए प्रबल आग्रह की आवश्यकता रही होगी, या पौलुस को तीमुथियुस को अपने प्रेरित होने के प्रमाण (यह पत्री) प्रदान करने की आवश्यकता रही होगी। अधिक संभव है कि यह "प्रेस्बिटरी" लुस्तरा[38] में तीमुथियुस के निवास-स्थान की मण्डली के प्राचीनों की थी और अवसर तीमुथियुस के पौलुस की सेवकाई के दल का एक भाग होने के लिए पृथक किए जाने का था (देखें प्रेरितों 16:1-3)।

कुछ का मानना है कि प्राचीनों ने तीमुथियुस पर उसे कोई आश्चर्यकर्म वाले वरदान के दिए जाने के लिए हाथ रखे। किन्तु, पौलुस ने यह नहीं कहा कि "वह वरदान जो तुझे प्राचीनों के हाथ रखने के द्वारा [διά, *दिया]*" परन्तु "प्राचीनों के हाथ रखने के साथ [μετά, *मेटा]*।" आर्चीबाल्ड थॉमस राबर्टसन ने कहा, "मेटा से अभिप्राय उपकरण या साधन नहीं होता है, वरन मात्र साथ होना।"[39] वॉल्टर बाऊर की यूनानी शब्दावली मेटा के लिए यह परिभाषा देती है जैसी कि 4:14 में प्रयुक्त हुई है: "विद्यमान परिस्थितियों का चिन्ह।"[40] तीमुथियुस के वरदान को स्वीकार करना (वह चाहे जो भी रहा हो[41]) औपचारिक समारोह के साथ हुआ जब प्राचीनों ने उस पर हाथ रखे।

हम नए नियम में हाथ रखे जाने के विभिन्न कारण देखते हैं।[42] इस क्रिया के तीन उद्देश्य थे (1) आशीषों का दिया जाना (मत्ती 19:13), (2) चुने जाने की पुष्टि (प्रेरितों 13:3; 1 तीमु. 5:22), और (3) आश्चर्यकर्म की योग्यता प्रदान करना (प्रेरितों 8:18; 19:6)। इनमें से दूसरा 4:14 के काम में सही बैठता है।

एक बार फिर, प्रेरितों 13 के साथ समानान्तर बनाया जा सकता है। उस अध्याय में पवित्र-आत्मा ने कहा "मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिस के लिए मैं ने उन्हें बुलाया है" (13:2)। फिर उन्होंने[43] उन्हें भेजने से पहले "उन पर [अर्थात, बरनबास और शाऊल पर] हाथ रखकर उन्हें विदा किया" (13:3)। इन भाइयों ने बरनबास और शाऊल पर आश्चर्यकर्म कर पाने की क्षमता प्रदान करने के लिए हाथ नहीं रखे, क्योंकि वे दोनों पहले से ही प्रेरणा पाए हुए वक्ता थे (13:1)। अपितु, यह कार्य इस बात की पुष्टि करने के लिए सार्वजनिक समारोह था कि बरनबास और शाऊल [पौलुस] आत्मा के द्वारा सेवकाई के लिए पृथक किए गए हैं। "अन्ताकिया की कलीसिया आत्मा के किसी

वरदान को *प्रदान* नहीं कर रही थी, वरन आत्मा के कार्य की *पुष्टि* कर रही थी।"[44]

फिर भी, जब प्राचीनों ने तीमुथियुस पर हाथ रखे, तब उन्होंने कोई आत्मिक वरदान प्रदान नहीं किया, परन्तु पौलुस के साथ यात्रा करने की भविष्यवाणी द्वारा किए गए चुनाव का सार्वजनिक अनुमोदन किया। इस पवित्र समारोह को स्मरण करना तीमुथियुस के लिए प्रोत्साहित करने वाला रहा होगा। उस समय, परमेश्वर ने उसे अपने स्थानीय अगुवों के द्वारा नियुक्त करवाया था।

हमारे 4:14 के विषय प्रश्नों का उत्तर देने के प्रयासों में हमें पौलुस के प्राथमिक चेतावनी को अनदेखा नहीं करना चाहिए। उसने तीमुथियुस को सचेत किया, "उस वरदान के प्रति जो तुझ में है *निश्चिन्त* मत रह" (बल दिया गया है)। जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "निश्चिन्त" ἀμελέω *(अमेलियो)* हुआ है वह μέλω (*मेलो*, "चिन्ता") के पहले नकारात्मक उपसर्ग α *(ए)* के लगाने से बनता है, और उसका अर्थ होता है "लापरवाह होना" या "उदासीन होना।"[45] तीमुथियुस को अपने वरदान को बहुमूल्य जानना था, उसका प्रयोग करना था, और उसे विकसित करना था। बाद में पौलुस ने उसे प्रोत्साहित किया "परमेश्वर के उस वरदान को जो तुझे मिला है प्रज्वलित कर दे" (2 तीमु. 1:6)।[46] कौशल तथा योग्यताओं से संबंधित पुरानी कहावत: "या तो उपयोग करो नहीं तो गंवा दो" यहाँ लागू होती है।

बढ़ते रहो (4:15)

[15]इन बातों को सोचते रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो।

आयत 15. परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने वरदान की अनदेखी करने के स्थान पर, तीमुथियुस को उसे और बढ़ाना था। पौलुस ने आगे कहा, **इन बातों को सोचते रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह**। "इन बातों" में वे सब सम्मिलित थीं जिनकी आज्ञा पौलुस ने तीमुथियुस को दी थी, परन्तु अभी दिए गए आदेश: "उस वरदान के प्रति जो तुझ में है निश्चिन्त मत रह" के प्रति इस विचार का विशेष उपयोग है। यहाँ "इन बातों को सोचते रह" μελετάω *(मेलेताओ)* से है, जिसका अर्थ है "ध्यान या अध्ययन, अभ्यास, विकसित करने के द्वारा और सुधारना।"[47]

वाक्याँश "इन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह" रोचक है - और विचारों को जागृत करने वाला भी। यूनानी लेख में बस इतना है "इन [बातों] *में* रहो" (बल दिया गया है)। MSG में आया है "इनमें अपने आप को डुबो लो।" डोनाल्ड गुथ्री ने लिखा, "जैसे कि शरीर उस वायु में डूबा रहता है जिसमें वह श्वास लेता है वैसे ही मन को भी इन बातों का अनुसरण करने में डूबे रहना है।"[48] फिलिप्स का भावानुवाद आयत 15 के पहले भाग को इस प्रकार से प्रस्तुत करता है: "अपना

सारा ध्यान, अपनी सारी शक्तियाँ, इन बातों को दो।"

तीमुथियुस के लिए यह महत्वपूर्ण क्यों था कि वह "इन बातों को सोचता रहे" और "इन बातों में ध्यान लगाए रहे"? पौलुस ने कहा, **ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो।** जिस शब्द का अनुवाद "उन्नति" (προκοπή, *प्रोकोपे)* हुआ है, वह κόπτω (*कोप्टो*, "काटना") को πρό (*प्रो*, "आगे") के साथ जोड़ता है। "इस शब्द का प्रयोग किसी ऐसे पथप्रदर्शक के लिए किया जाता था जो झाड़ियाँ काटकर मार्ग बनाते हुए चलता है।"[49] अपने शब्दों और जीवन से, एक सुसमाचार प्रचारक को उन सबके लिए मार्ग साफ़ करना था जो उसकी सुनते हैं।

पौलुस ने अपनी शब्दावली तीमुथियुस को प्रोत्साहित करने के लिए चुनी होगी। परन्तु उसने यह नहीं कहा कि "ताकि तेरी *सिद्धता* सब पर प्रगट हो," बल्कि यह कि "ताकि तेरी *उन्नति* सब पर प्रगट हो।" हम में से कोई भी जो प्रचार करने का प्रयास करेंगे, वे 4:11-5:2 की चुनौतियों के अनुसार सिद्धता के साथ कभी नहीं जीने पाएँगे; परन्तु, परमेश्वर की सहायता से, हम उन्नति करते जा सकते हैं। वॉरेन डब्ल्यू. रिस्बी ने लिखा, "अच्छे सेवक होने के नाते, हम वचन का प्रचार करते हैं; भक्त सेवक होने के नाते, हम वचन का पालन करते हैं; बढ़ोतरी करने वाले सेवक होने के नाते, हम वचन में उन्नति करते हैं।"[50]

जो उन्नति हम करते हैं उसका "सब पर प्रगट" होना आवश्यक है। विशेष रूप से यदि मण्डली के सदस्य देखेंगे कि एक युवा प्रचारक प्रयास कर रहा है - भरसक प्रयास कर रहा है - अपनी सेवकाई के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करने के लिए, तो वे धीरजवन्त और सहायक होंगे।

ध्यान केंद्रित रखें (4:16)

[16]अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख। इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।

आयत 16. हम में से जो प्रचार करते तथा शिक्षा देते हैं उन्हें सदा उन्नति करते रहना चाहिए (4:11, 13-15), और हमारी शिक्षाओं को भक्ति के जीवन का समर्थन मिलना चाहिए (4:12)। एक बार फिर से पौलुस ने इन मूल दायित्वों पर बल दिया: **अपनी और अपने उपदेश[51] की चौकसी रख; इन बातों पर स्थिर रह।** "चौकसी रख" ἐπέχω *(इपेको)* से है, जो कि ἔχω (*इको*, "रखना" या "थामना") के पहले ἐπί (*एपी,* "पर" या "के ऊपर") लगाने से है। इसका शब्दार्थ होता है "को थामे रहो," "दृढ़ता से थामो।"

अगला शब्द "स्थिर रहो" इसमें विचार जोड़ता है कि "और फिर कभी छोड़ना मत!" "स्थिर रहो" ἐπιμένω *(एपिमेनो)* से है, जो कि "वैसे ही रहो" (μένω, *मेनो)* के लिए शब्द है, जिसे पूर्वसर्ग (ἐπί, *एपी)*[52] द्वारा और दृढ़ किया गया है। पौलुस ने प्रचारक के जीवन को उसकी शिक्षा से पहले लिखा। यदि कोई

प्रचारक वैसे नहीं जी रहा है जैसा मसीही को जीना चाहिए, उसे कभी मण्डली के सामने खड़े होकर प्रचार नहीं करना चाहिए।

यह क्यों महत्वपूर्ण है कि प्रचारक अपने जीवन और शिक्षा के प्रति गंभीरता से ध्यान दे? क्या यह इसलिए जिससे उसकी प्रशंसा हो और प्रचारक के रूप में उसका आदर हो? नहीं। क्या यह इसलिए जिससे उसे प्रचार करने का प्रमुख स्थान मिले और उसे पैसे दिए जाएँ?[53] कदापि नहीं! पौलुस ने हमारे सुसमाचार प्रचारक होने के उच्चतम उद्देश्य के लिए कहा, **क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।**[54] हम अपने मनों में शब्द "उद्धार" को रेखांकित कर लें। प्रचारक होने के नाते हमारे समय और बल पर इतनी माँग रहती है कि हमारे ध्यान का केंद्र पर से हट जाना सरल रहता है। प्रचार करने में हमारा उद्देश्य होना चाहिए जिससे लोग उद्धार पाएँ। यीशु "खोए हुओं को ढूंढने और उन का उद्धार करने" आए थे (लूका 19:10)। हमारा भी यही उद्देश्य होना चाहिए।

एक बार फिर, पौलुस का क्रम ध्यान देने योग्य है। प्रचारक को पहले अपने उद्धार के विषय चिन्तित होना चाहिए, और उसके बाद अपने श्रोताओं के उद्धार के बारे में। किसी ने कहा है कि ऐसा कोई भी जन, जो पाप के सागर में डूबते हुओं के लिए जीवन रक्षा की रस्सी फेंक रहा है, उसे पहले, उद्धार के जहाज़ पर स्थिरता से पाँव जमाकर, स्वयं सुरक्षित हो जाना चाहिए। पौलुस ने प्रचारक के भटक जाने की संभावना को पहचाना। उसने लिखा, "परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार कर के, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं" (1 कुरि. 9:27)। हम सब को सचेत रहना है कि कहीं हम गिर न पड़ें (1 कुरि. 10:12)। परन्तु, यदि हम अपने जीवन और उपदेश की "चौकसी रखें" तो, न केवल हम स्वयं बचे रहेंगे, वरन हम सबसे अधिक आनन्द को भी जान सकेंगे, हमें सुनने वालों के उद्धार होते हुए देखने के द्वारा!

अनुप्रयोग

प्रचार का कार्य (4:11-16)

कभी-कभी, उपदेश देना असंभव कार्य लग सकता है। लेकिन फिर भी, प्रतिदिन, सारे संसार में, ऐसे लोग हैं जो यह कर रहे हैं - और अच्छे से कर रहे हैं, परमेश्वर की सहायता द्वारा। सत्रहवीं शताब्दी में, रिचर्ड बैक्सटर ने यह दो पंक्तियाँ लिखीं:

> मैं ऐसे प्रचार करता हूँ मानो अगले प्रचार की निश्चितता नहीं है और जैसे कोई मरता हुआ किसी अन्य मरते हुए व्यक्ति को करे।[55]

आज चार शताब्दी बाद भी यह एक योग्य भावना है। परमेश्वर उन सभी के साथ हो जो शिक्षा और उपदेश करते हैं। आप सभी की बढ़ोतरी सभी को विदित हो।

तीमुथियुस की युवावस्था (4:12)

मैं तीमुथियुस के साथ सहानुभूति रखता हूँ। मैं इक्कीस वर्ष का था जब मैं कॉलेज से स्नातक होकर निकला और ग्रेटर ओकलोहामा शहर के ग्रामीण कलीसिया में कार्य करना आरंभ किया। मैं तीन वर्ष से प्रचार कर रहा था किन्तु अपने आयु के विषय कष्ट सहित अवगत था। एक अतिथि सुसमाचार प्रचारक ने प्रवचन मंच से मुझपर नीचे की ओर देखते हुए कहा, "क्या मैं कभी इतना युवा था?" कुछ वर्षों पश्चात, हम ओकलोहामा के मसोकोजी को स्थानान्तरित हो गए। वहाँ जब एक विधवा को ज्ञात हुआ कि प्राचीनों ने मुझे कार्य पर रखा है, तो उसने अपना सर हिलाते हुए कहा, "हमने पालने-पोसने के लिए एक और को ले लिया है!"

तीमुथियुस को क्या करना था? किसी भी युवा प्रचारक को क्या करना चाहिए? तीमुथियुस असंतोष प्रकट कर सकता था "यह उचित नहीं है!" वह अपने आलोचकों को शान्त करने के लिए तीखे शब्दों का प्रयोग कर सकता था, जैसे कि "मेरी आलोचना करने वाले आप कौन होते हैं? परमेश्वर के वचन के संबंध में आपका ज्ञान मेरे ज्ञान से बहुत कम है!" वह यह प्रत्युत्तर भी दे सकता था, "यदि भाई लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करेंगे, तो मैं छोड़ दूँगा!" इनमें से कोई भी प्रत्युत्तर उचित नहीं होता। पौलुस ने संकेत दिया कि तीमुथियुस को आदर की *माँग* नहीं करनी थी, वरन उसे *अर्जित* करना था - अच्छा उदाहरण बनने के द्वारा।

प्रचारक और पवित्रता (4:12)

प्रत्येक प्रचारक को, वह चाहे युवा हो या वृद्ध, गंभीरता से विचार करना चाहिए कि वह दूसरे लिंग के व्यक्ति के प्रति कैसा व्यवहार रखेगा। कुछ प्रचारक अपने साथ सदा ही किसी और को लेकर जाते हैं जब वे किसी अकेली महिला से मिलने जाते हैं। कुछ बुद्धिमता के साथ सुनिश्चित करते हैं कि कभी कमरे या दफ़्तर का दरवाज़ा बन्द न करें जब वे किसी महिला को परामर्श दे रहे हों। एक प्रचारक को ध्यानपूर्वक बच कर रहना चाहिए "अनैतिकता के संकेत मात्र से भी, या किसी अपवित्रता से . . . क्योंकि ये परमेश्वर के पवित्र लोगों के लिए अनुचित है" (इफि. 5:3; NIV)। मेरा यह अवलोकन रहा है कि किसी भी अन्य उल्लंघन की अपेक्षा यौन अनौचित्य के द्वारा सर्वाधिक प्रचारक नाश हुए हैं।

वचन का सार्वजनिक पठन (4:13)

प्रथम शताब्दी में पवित्र-शास्त्र का सार्वजनिक पठन अनिवार्य था क्योंकि अधिकांश लोगों के लिए परमेश्वर के वचन को सीखने का यही एक साधन था। हाथों द्वारा बनाई गई प्रतिलिपियां बहुत महंगी थीं, साथ ही यह अनुमान लगाया गया है कि 60 से 90 प्रतिशत जनसंख्या अनपढ़ थी। आरंभ में, बाइबल की पुस्तकें आँख के लिए नहीं वरन कानों के लिए लिखी गईं थीं।[56]

आज हम से अधिकांश स्वयं बाइबल पढ़ सकते हैं, परन्तु इसका यह अर्थ

नहीं है कि पवित्र-शास्त्र का सार्वजनिक पठन महत्वहीन है। आराधना में केवल यही वह समय होता है जब परमेश्वर हम से बात करता है, बिना मनुष्यों के शब्दों या राय की मिलावट के। एंड्रयु डब्ल्यू. ब्लैक्वुड का निष्कर्ष था, "पवित्र-शास्त्र का पढ़ा जाना संभवतः सार्वजनिक आराधना का सबसे महत्वपूर्ण भाग है।"[57]

कुछ मंडलियों में आराधना के समय बाइबल का पढ़ा जाना महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता है। उन्होंने या तो ऐसा करना बिलकुल छोड़ दिया है, या उपदेश की प्रस्तावना में कुछ आयतें पढ़ी जाती हैं। यदि कोई खण्ड पढ़ा भी जाता है, तो यह किसी ऐसे भाई द्वारा औपचारिकता वश किया जाता है जो इसकी तैयारी से नहीं होता है। कलीसिया के लिए यह भला होगा कि पवित्र-शास्त्र के सार्वजनिक रूप में पढ़े जाने को पुनः स्थापित करे, और समय निकाल कर ऐसे पुरुषों को तैयार करे जो परमेश्वर के वचन को "स्पष्ट" पढ़ सकें, उसका "अर्थ प्रदान"[58] कर सकें और सुनने वालों को "पढ़े हुए की समझ प्रदान कर सकें" (नहेम्य. 8:8; KJV)।[59]

पढ़ना, सिखाना, उपदेश करना (4:13)

आरंभिक कलीसिया में 4:13 में उल्लेखित तीनों बातें आराधना सभा का बहुत महत्वपूर्ण भाग थीं। दूसरी शताब्दी में, जस्टिन मार्टयर ने लिखा,

> उस दिन को जिसे इतवार कहते हैं, जितने भी शहरों या गाँवों में रहते हैं, वे एक स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं, और प्रेरितों तथा भविष्यद्वक्ताओं के लेख पढ़े जाते हैं, जब तक समय अवसर दे; फिर जब पढ़ने वाला समाप्त कर चुके, तो अगुवा बोलना आरंभ करता है, लोगों को निर्देश देता है, उपदेश देता है कि उन भली बातों का अनुसरण करें।[60]

प्रचार करने वाले के लिए दिए गए तीनों पारिभाषिक शब्द विशिष्ट दायित्व हैं। हमारे सन्देश का मर्म सदैव ही परमेश्वर का वचन होना चाहिए ("पवित्र-शास्त्र का सार्वजनिक पढ़ा जाना")। हमें अपने श्रोताओं को वचन को समझाना चाहिए जिससे वे उसे समझ सकें ("शिक्षा")। फिर हमें सब से यह आग्रह करना चाहिए कि वे वचन की बातों का पालन करें ("उपदेश")। ये शब्द सुनने वालों पर इनसे संबंधित दायित्व भी निहित करते हैं।

प्रचारक	*श्रोता*
पढ़ें (ऊँचे स्वर में)	सुनें
शिक्षा दें	सीखें
उपदेश करें	पालन करें

तीमुथियुस को अपने आप को इन कार्यों के प्रति समर्पित करना था। सुसमाचार प्रचारकों को इन प्राथमिक दायित्वों को कभी नहीं भूलना चाहिए।

"अपने वरदान के प्रति निश्चिन्त मत रह" (4:14)

4:14 का प्रारंभिक अनुप्रयोग प्रचारकों के लिए है। हम आश्चर्यकर्मों के युग में तो नहीं रहते हैं, परन्तु सभी प्रचारकों के पास प्रभु से मिले वरदान (कौशल या योग्यताएँ) हैं। किसी के पास उपदेश देने के वरदान हैं। किसी के पास बाइबल की शिक्षाएँ देने का वरदान है। किसी के पास व्यक्तिगत रीति से सुसमाचार देने का वरदान है। किसी के पास लोगों के साथ संबंध बनाने का वरदान है। किसी के पास सहायता करने तथा औरों को सांत्वना देने का वरदान है। यदि आप प्रचारक हैं तो अपने वरदान सुनिश्चित कर लीजिए। (यदि आपको यह निश्चित नहीं है कि वे क्या हैं, तो अपने कुछ विश्वासयोग्य मित्रों से पूछ लीजिए।) फिर ध्यान रखिए कि उनकी अवहेलना न हो। सभी प्रचारकों के कुछ सामर्थ्य और कुछ दुर्बलताएं होती हैं। अपनी दुर्बलताओं पर कार्य कीजिए किन्तु अपने सामर्थ्यों की अवहेलना मत होने दीजिए।

प्रत्येक मसीही के लिए अनुप्रयोग किए जा सकते हैं। पौलुस हम सब से कहता, "परमेश्वर द्वारा प्रदान की गई अपनी क्षमताओं के अनुसार जीवन व्यतीत करो।" हम सभी के पास वरदान हैं (रोमियों 12:3-8)। हमें उन्हें बहुमूल्य जानकर संजो कर रखना चाहिए; वे प्रभु से हैं। हमें उन्हें प्रयोग करना है; परमेश्वर ने उन्हें हमें उसकी महिमा और उसकी कलीसिया की उन्नति के लिए दिया है (देखें इफि. 4:11, 12, 16)। हमें उन्हें विकसित करना चाहिए, सदा प्रयासरत रहना चाहिए कि स्वामी की सेवा में उन्नत होते जाएँ। जो एक कार्य हमें कभी नहीं करना है वह है उनके प्रति *निश्चिन्त* होना।

"उन्नति करते जाओ" (4:15)

जो चुनौती सभी प्रचारकों के लिए है, युवा अथवा वृद्ध, वही चुनौती सभी मसीहियों के लिए भी है: बढ़ते जाओ। जहाँ आत्मिक रीति से हैं उससे कभी संतुष्ट न हों। मसीही जीवन में जड़ होकर थम जाना असंभव है। यदि आप उन्नति नहीं कर रहें हैं तो आप पतन की ओर लौट रहे हैं। "पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ" (2 पतरस 3:18)। "सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं।" (इफि. 4:15)।

समाप्ति नोट्स

[1]चार्ल्स आर. एर्डमैन, *द पास्टरल एपिस्टल ऑफ़ पॉल* (फिलाडेल्फियाः वेस्टमिंस्टर प्रेस, 1923), 55. [2]"कोई तेरी जवानी को तुच्छ न जानने पाए" आदेशात्मक नहीं लगता पर यह है। एक यथा अनुवाद इस प्रकार हो सकता है "कोई तुझे तुच्छ न जानें।" [3]इस शब्द का संज्ञा रूप "सीखाना" 4:13 में प्रयोग किया गया है। [4]वाल्टर बाऊर, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्सीकन ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* तीसरा संस्करण, संशोधित और संपादक फ्रेडेरिक विलियम डांकर (शिकागोः यूनीवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 760. [5]डब्ल्यु. ई. वाइन, मेरिल एफ. अंगर, और विलियम व्हाइट, जूनियर, *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजीटर्स डिक्सनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेंट वर्डस* (नैशविलः थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 96. (देखें 1:18.) [6]इन

आयतों में KJV लगातार *टाओटा* का अनुवाद "these things" ("इन बातों") करता है। NASB में दो अवसरों पर "these principles" ("इन सिद्धांतो") प्रयोग किया गया है (5:21; 6:2)। [7]आज भी कुछ समाजों में वृद्धावस्था को युवावस्था के तुलना में तुच्छ समझा जाता है। किसी के आयु का ध्यान रखे बिना इनमें से कई सिद्धांत आज भी लागू होता है। जब कोई हमें नीचा दिखाता है, तो हमें अपने समर्पण का पुनर्निरीक्षण करना है और जैसे एक मसीही को सोहता है वैसे ही व्यवहार करना है। [8]वाइन, अंगर, और व्हाइट, 163. [9]बाऊर, 529. [10]*नियोटेस* का संबंध νέος से है (*नियोस,* "नया," "ताजा," "युवा")।

[11]फिर भी, 4:12 को ध्यान में रखते हुए, तीमुथियुस की पहचान इस अध्ययन में "युवा प्रचारक" के रूप में की गई है। [12]आइरेनियस *अगैंस्ट हेरेसीज* 2.22.5. [13]बाऊर, 1019. [14]उपरोक्त, 1020. [15]KJV अनुवाद में "spirit" भी सूची में जोड़ा गया है, यद्यपि इस प्रकार के अनुवाद को प्राचीन दस्तावेजों का समर्थन प्राप्त नहीं है। (ब्रूस एम. मेत्सगर, *ए टेक्सचुअल कमेंट्री आन द ग्रीक न्यू टेस्टामेंट,* द्वितीय संस्करण [स्टटगार्ट, जर्मनीः जर्मन बाइबल सोसाईटी, 1994], 574.) इस आयत में "आत्मा" का सूची में जोड़े जाने या न जोड़े जाने इसकी प्रतिबल में कोई कमी नहीं है। [16]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 59; बाऊर, 73. KJV में यहाँ इसका अनुवाद "conversation" (वार्तालाप) किया गया है, जिसका आज किंग जेम्स के दिनों से भिन्न अर्थ है। [17]देखें 1:5. [18]बाऊर, 818-20. [19]उपरोक्त। [20]उपरोक्त, 12; वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 498.

[21]पहला तीमुथियुस 5:2 भी "पवित्रता" के लिए उसी शब्द का प्रयोग करता है जो 4:12 में प्रयोग किया गया है। नये नियम में यही केवल दो स्थान हैं जहाँ इस शब्द का प्रयोग किया गया है। [22]देखें 3:14. [23]बाऊर, 879-80. इसका प्रयोग 4:1 में भी किया गया है। [24]कई लेखकों की मान्यता है कि "लौलीन रहना" यह संकेत करता है कि तीमुथियुस को इफिसुस और इफिसुस के चारों ओर की कलीसिया में आराधना संचालन करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। ऐसा त्रुटिपूर्ण अनुमान, तीमुथियुस का "इफिसुस के बिशप" होने आंकलन से लगाया गया था। नये नियम में एकल बिशप/प्राचीन/पासबान जो एक क्षेत्र की कलीसिया का संचालन करता हो, के अभ्यास के बारे में अज्ञात है। इससे बढ़कर, चूँकि तीमुथियुस युवा थे और संभवतः अविवाहित थे, तो उसकी योग्यता प्राचीन/पासबान होने की नहीं थी। आयत 13 का निर्देश व्यक्तिगत् है - जो एक युवा प्रचारक को दिया गया था, और किसी कलीसिया के अगुवे को नहीं दिया गया था। [25]*अनाग्नोसिस,* ἀνά (*अना,* "दोबारा") और γνῶσις (*ग्नोसिस,* "ज्ञान") के संयोजन से बना है, जो पढ़ने से प्राप्त ज्ञान की ओर संकेत करता है। [26]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 508. परमेश्वर के वचन का सार्वजनिक पठन और व्यक्तिगत् पठन दोनों महत्वपूर्ण है (देखें 2 तीमु. 3:16, 17), लेकिन 4:13 सार्वजनिक आराधना पर केंद्रित है। [27]"परमेश्वर के वचन का सार्वजनिक पठन" से संबंधित दूसरा अनुच्छेद प्रकाशितवाक्य 1:3 है। [28]इसका यह अर्थ नहीं है कि प्रचार करना महत्वपूर्ण नहीं है। क्रिया *केरूस्सो* 2 तीमुथियुस 4:2 में मिलती है। 1 तीमुथियुस 4:13 में पाए जाने वाली तीन पारिभाषिक शब्दों को संभवतः प्रचार के तीन भागों के समान देखना चाहिए। [29]यह शब्द παρά (पैरा, "साथ में") और καλέω (*कलियो* "बुलाना") की संधि से है। इस शब्द का क्रिया रूप 1:3; 2:1 में प्रयुक्त हुआ है। [30]भविष्यद्वक्ताओं और भविष्यवाणियों पर और टिप्पणियों को देखने के लिए 1:18 पर टिप्पणियों को देखें।

[31]बाऊर, 1081. यूनानी लेख में 4:14 में मात्र "वरदान" आया है, न कि "आत्मिक वरदान।" [32]ऐसे वरदानों की चर्चा, रोमियों 12:6-8 के संदर्भ में, डेविड एल. रोपर, *रोमंस 8-16: ए डॉक्ट्रिनल स्टडी,* ट्रुथ फॉर टुडे कॉमेन्ट्री (सियर्सी, आर्कैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2014), 253-57 में देखें। [33]3:1 के संदर्भ में, हमने ध्यान किया कि "प्राचीन" और "प्रेस्बिटर्स" कलीसिया के अगुवों के लिए ओहदे हैं। ऐसे व्यक्तियों को "निरीक्षक/बिशप" और "चरवाहे/पास्टर्स" भी कहा जाता है। [34]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 196; बाऊर, 861. [35]इग्नेशियस एक प्रेरणारहित मसीही लेखक था जिसने आरंभिक दूसरी शताब्दी में लिखा। माना जाता है कि वह प्रेरित यूहन्ना का शिष्य था। [36]ए. टी. हैनसन, *द पास्टोरल एपिसल्स,* द न्यू सेंच्युरी बाइबल कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन:

विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कंपनी, 1982), 94. यद्यपि इग्नेशियस ने "प्रेस्बिटरी" शब्द का सही प्रयोग किया, उसने "प्राचीनों/ प्रेस्बिटर्स" को "बिशप" शीर्षक के आधीन रख कर गलत किया। यह नए नियम के विश्वास से भटक जाने की एक आरंभिक बात है। (इग्नेशियस *इफिसियंस* 2.2; 4.1; 20.2; *मैग्नीसियंस* 2; 13.1; *ट्राल्लियंस* 2.2; 7.2; 13.2; *फिलाडेल्फियन्स* 4; 5.1; 7.1; स्मर्नेइयंस 8.1; 12.2.) [37]कुछ का सुझाव है यह तब हुआ जब तीमुथियुस "इफिसुस का बिशप" बना - जो कि एक विचित्र निष्कर्ष है क्योंकि तीमुथियुस बिशप/प्राचीन होने के लिए अयोग्य था (क्योंकि उसकी न पत्नि थी और न बच्चे; देखें 3:1-4; तीतुस 1:5, 6) और क्योंकि इफिसुस की कलीसिया में बिशप्स/प्राचीनों की विविधता थी (प्रेरितों 20:17, 28)। [38]पौलुस की प्रथम मिशनरी यात्रा के अन्त की ओर, उसने और बरनबास ने "हर एक कलीसिया में उन के लिए प्राचीन ठहराए" (प्रेरितों 14:23), लुस्तरा की कलीसिया में भी (प्रेरितों 14:21)। [39]आर्चीबाल्ड थॉमस राबर्टसन, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टेस्टामेंट*, वोल. 4, *द एपिसिल्स ऑफ पौल* (न्यू यॉर्क: हार्पर & ब्रदर्स, 1931), 581. [40]बाऊर, 637.

[41]यदि यह आश्चर्यकर्म का वरदान था, तो यह लगभग निश्चित है कि यह पौलुस के द्वारा उस पर हाथ रखे जाने का परिणाम था (देखें 2 तीमु. 1:6)। [42]नए नियम में वाक्यांश का सबसे अधिक प्रचलित प्रयोग किसी को दण्ड या कारावास में डाले जाने के लिए पकड़े जाने के लिए है। हाथों के रखे जाने पर चर्चा के लिए देखें डेविड एल. रोपर, *एक्ट्स 1-14*, ट्रुथ फॉर टुडे कॉमेन्ट्री (सियर्सी, आर्केसा: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2001), 504-6, और कार्ल स्पेन, *द लेटर्स ऑफ पौल टू टिमोथी एण्ड टाईटस*, द लिविंग वर्ड कॉमेन्ट्री (ऑस्टिन, टेक्सस: आर. बी. स्वीट कंपनी, 1970), 82. [43]हमें यह नहीं बताया गया है कि किसने बरनबास और शाऊल पर हाथ रखे। संभवतः यह सदस्यों का प्रतिनिधित्व करने वाला समूह था। यदि मण्डली में प्राचीन थे, तो यह कार्य करने वाले वे ही सबसे अधिक संभावित जन रहे होंगे। [44]रोपर, *प्रेरितों 1-14*, 474. [45]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 429; बाऊर, 52. [46]चाहे 1 तीमुथियुस 4 और 2 तीमुथियुस1:6 का वरदान एक ही थे या नहीं, यह सचेत करना फिर भी वैध है। [47]बाऊर, 627. [48]डोनाल्ड गुथ्री, *द पास्टोरल एपिसिल्स*, रिव. एड., द टिन्डेल न्यू टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कंपनी, 1990), 110. [49]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 259. [50]वॉरिन डब्ल्यू. रिस्बी, *द बाइबल एक्सपोजिशन कॉमेन्ट्री: न्यू टेस्टामेंट*, वोल. 2 (व्हीटन, इल्लिनोय: विक्टर बुक्स, 1989), 228.

[51]"उपदेश" उसी यूनानी शब्द से है जो 4:13 में पाया जाता है। [52]पौलुस ने शब्दों के साथ कुछ खिलवाड़ किया। आयत 16 के आरंभ के दोनों अनिवार्य *एपी* के साथ आरंभ होते हैं। [53]प्रचारक को मेहनताना दिया जाना पवित्र-शास्त्र के अनुसार है (देखें 1 कुरि. 9), परन्तु यह प्रचार का उद्देश्य नहीं होना चाहिए (देखें 1 तीमु. 6:5)। [54]यूनानी लेख में यह शब्दार्थ आया है "तू अपने और जो तेरे श्रोता हैं उन्हें उद्धार देगा" (देखें KJV)। शब्दावली "तू उद्धार देगा" कुछ व्याख्याकर्ताओं को विचलित करती है क्योंकि परमेश्वर, न कि प्रचारक, उद्धारकर्ता है। परन्तु परमेश्वर के वचन के प्रचारक होने के कारण, हम परमेश्वर के यंत्र हैं (2 कुरि. 5:20), जो सुसमाचार को प्रस्तुत करते हैं, जो कि उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है (रोमियों 1:16)। [55]डेविड एफ. बर्जेस, एड. *एन्साइक्लोपीडिया ऑफ सरमन इल्लास्ट्रेशंस* (सेंट लुई, मिस्सौरी: कौन्कौर्डिया पबलिशिंग हाउस, 1988), 160. [56]डेल हार्टमैन, ईस्टसाईड चर्च ऑफ क्राईस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लोहोमा, में सितंबर 6, 2015 को प्रचार किया गया उपदेश। [57]एंड्रयु डब्ल्यू. ब्लैक्वुड, *द फाइन आर्ट ऑफ पब्लिक वरशिप* (न्यू यॉर्क: एबिंगडन-कोक्सबरी प्रैस, 1939), 128. [58]इसमें लेख की व्याख्या करना या उसका अनुवाद करना भी सम्मिलित हो सकता है, जैसा कि नहेमायाह 8:8 का NASB का स्वरूप संकेत करता है। [59]प्रशिक्षण का एक सच्छा स्त्रोत बैटसेल बैरेट बैक्सटर की *स्पीकिंग फॉर द मास्टर* में "रीडिंग द बाइबल" अध्याय है (न्यू योर्क: मैकमिलन कंपनी, 1954), 23-31. [60]जस्टिन मार्टयर, *एपोलोजी* 1.67.